जीवन-परिचय

↓

महादेवी वर्मा

छायावाद के चार स्तम्भों में से एक आधुनिक युग की मीरा महादेवी वर्मा जी का जन्म सन् 1907 ई० में फर्रुखाबाद में हुआ था। पिता का नाम श्री गोविन्द सहाय एवं माता हेमरानी देवी थीं। पिता इन्दौर के एक कॉलेज में अध्यापक थे।

बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की महादेवी माँ से महाभारत एवं रामायण की कथाएँ सुनती थीं। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम० ए० करने के पश्चात प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या बन गयीं। इनका विवाह रूपनारायण वर्मा के साथ हो गया। बाद में वैवाहिक जीवन सफल नहीं रहा। दाम्पत्य जीवन में रुचि नहीं थी।

भारत सरकार द्वारा महादेवी वर्मा जी को 'पद्मभूषण' अलंकार (पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। साहित्य की सेवा करते हुए इनका स्वर्गवास सन 1987 ई० को हो गया।

उ० प्र० विधानपरिषद की सदस्या भी रह चुकी हैं। इनके अप्रतिम योगदान के लिए हिन्दी संसार इनका सदैव ऋणी रहेगा।

Scanned by TapScanner

रचनाएँ :—

कवि चतुष्टय में से एक महादेवी वर्मा जी को इनकी कृतियों के लिए ज्ञानपीठ एवं भारत भारती पुरस्कार भी दिया गया। इनकी रचनाएँ निम्न-लिखित हैं ——

1. नीहार
2. रश्मि
3. नीरजा
4. सांध्यगीत
5. दीपशिखा
6. सप्तपर्णा
7. हिमालय
8. यामा — ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

[ट्रिक]

↓

नी.र.नी.सां.दी. स.हि.या.

Scanned by TapScanner